8

प्रज्ञा-प्रवाह

व्याकरण एवं अभ्यास पुस्तिका

प्रज्ञा-प्रवाह

व्याकरण एवं अभ्यास पुस्तिका

8

प्रकाशक

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

नारायण भवन, गीता निकेतन परिसर, सलारपुर रोड़,
कुरुक्षेत्र-136118 ☎ 01744-259941
: vbukprakashan@gmail.com, vbukkkr@yahoo.co.in : vbukprakashan.com

प्रकाशक एवं वितरक

Vidya Bharti Uttar Kshetar

Narayan Bhawan, Gita Niketan Parisar, Salarpur Road, Kurukshetra-136118

01744-259941 : vbukprakashan@gmail.com, vbukkkr@yahoo.co.in : vbukprakashan.com

वितरण-केन्द्र

भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू कश्मीर प्रदेश

भारतीय विद्या मंदिर परिसर, अम्बफला, वेद मंदिर, जम्मू-180 005

दूरभाष : 0191-2547953

E-mail: bssjk08@gmail.com
E-mail: bssjmu2006@yahoo.com

सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब

विद्या धाम, गुरु गोबिन्द सिंह एवेन्यू,

नजदीक टेलीफोन एक्सचेंज, जालन्धर-144 009

दूरभाष : 0181-2421199, 2420876

E-mail: ses.jld@gmail.com

हिमाचल शिक्षा समिति, शिमला

सरस्वती विद्या मन्दिर, हिम रश्मि परिसर, विकास नगर,

शिमला-171 009, दूरभाष : 0177-2620813, 2620814

E-mail: himachalshikshasamitishimla@gmail.com
E-mail: shikshasamiti@sancharnet.in

हिन्दू शिक्षा समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर,

लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136118 (हरियाणा)

दूरभाष : 01744-270241, 9996542500

E-mail: hsskkr@yahoo.co.in

ग्रामीण शिक्षा विकास समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर,

लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136118 (हरियाणा)

दूरभाष : 01744-270241, 9996542500

E-mail: gsvskkr@yahoo.co.in

हिन्दू शिक्षा समिति-दिल्ली

डी.ए.वी.व.मा. विद्यालय क्र. 2, शंकर नगर, दिल्ली-110 051

दूरभाष : 011-22008542

E-mail: hindushikshasamiti@gmail.com

हिन्दू शिक्षा समिति, न्यास

गीता बाल भारती परिसर, राजगढ़ कॉलोनी,

दिल्ली-110 031

दूरभाष : 011-22002957

E-mail: hssn2604@gmail.com

समर्थ शिक्षा समिति

सरस्वती शिशु/बाल मन्दिर परिसर, आरामबाग,

डेसू कार्यालय के पास, पहाडगंज, नई दिल्ली-110055

दूरभाष : 011-23631216, 23631247

E-mail: samiti59@yahoo.com

प्रथम संस्करण : 2020

वैधानिक चेतावनी: यह पुस्तक विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा प्रकाशित है। इस पुस्तक का प्रत्येक भाग सर्वाधिकार सुरक्षित है।

लेखक मण्डल

राजेश कुमार
M.A., L.T., B.Ed.
सैक्टर 40, चण्डीगढ़

सुभाष शर्मा
M.A., B.Ed.
प्रान्त सह सेवा शिक्षा प्रमुख
विद्या भारती हरियाणा

राम कुमार
M.A., L.T., B.Ed.
प्रान्त प्रशिक्षण प्रमुख
विद्या भारती हरियाणा

शेषपाल सिंह
M.A., B.Ed.
प्रान्त शैक्षिक प्रमुख
विद्या भारती हरियाणा

Printed By :

Bulbul Printing Press, Plot No. 1831, Deep Complex, Hallo Majra, Near Power Grid, Chandigarh-160002

प्रस्तावना

'प्रज्ञा प्रवाह' व्याकरण एवम् अभ्यास पुस्तिका भाग-8 के अध्ययन एवम् प्रायोगिक क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थी व्याकरण को सहजता व सरलता से सीखने में सक्षम होंगे। व्याकरण के प्रयोग से भाषा सीखने और समझने से विद्यार्थियों का स्वतन्त्र चिन्तन भी विकसित होगा तथा भाषा का रचनात्मक प्रयोग भी बढ़ेगा। पुस्तक केवल परीक्षा आधारित न होकर व्यावहारिक व नैतिक मूल्य आधारित बने तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (N.C.E.R.T.) के मानकों के अनुरूप बनकर विद्यार्थी के सभी कौशलों में वृद्धि करे, ऐसा एक सद्प्रयास है।

विद्यार्थी की कल्पना शक्ति एवम् सृजनात्मकता का विकास सहज रूप में हो, इस दृष्टि से भाषा सरल, स्पष्ट और सुबोध बने, इसका विशेष रूप से ध्यान रखा गया है। अध्ययन व अध्यापन में रुचि बने, इसलिए मनोभाव जागरण हेतु चित्रों का यथा स्थान प्रयोग किया गया है। पाठ्य सामग्री का चयन विद्यार्थियों की आयु व ग्राह्य क्षमता को ध्यान में रखकर किया गया है। शिक्षण-सूत्र व शिक्षण-युक्तियों का भी उचित उपयोग हुआ है।

सभी अध्यायों में तथा उनके अभ्यास में शिक्षणेत्तर गतिविधियों को स्थान दिया गया है जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होगा। स्थानीय परिवेश व जीवन शैली के उदाहरण व प्रायोगिक कार्य विद्यार्थी को जीवन मूल्यों से जोड़ेंगे, ऐसा विश्वास है।

लेखन कार्य और वह भी व्याकरण सम्बन्धी, सर्वथा एक कठिन कार्य है। उत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष श्रीमान सुरेन्द्र अत्री जी व हरियाणा प्रान्त के संगठन मन्त्री श्रीमान रवि कुमार जी के मार्गदर्शन में यह कार्य संभव हो पाया। इसके अतिरिक्त डॉ॰ कुलदीप कुमार एवं जिन बंधु-भगिनियों का सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सभी के प्रति भी लेखक मण्डल आभार व्यक्त करता है।

आपके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी तथा हृदय से स्वागत भी।

लेखक मण्डल

अनुक्रमणिका

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
01.	भाषा, बोली, लिपि, व्याकरण	05
02.	वर्ण-वर्णमाला	11
03.	संधि प्रकरण	17
04.	शब्द विचार	23
05.	शब्द भण्डार अ-विलोम शब्द	29
	ब-पर्यायवाची	31
	स-वाक्यांश के लिए एक शब्द	35
	द-अनेकार्थी शब्द	38
	य-श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द	41
06.	शब्द रचना अ-उपसर्ग	43
	ब-प्रत्यय	44
07.	शब्द रचना - समास	53
08.	विकारी शब्द - 1-संज्ञा	57
09.	संज्ञा के विकारक तत्व क-लिंग	61
10.	ख-वचन	67
11.	ग-कारक	72
12.	विकारी शब्द - 2-सर्वनाम	76
13.	3-विशेषण	82
14.	4-क्रिया	86
15.	क्रिया - क- काल	91
16.	ख-पक्ष	94
17.	ग-वाच्य	96
18.	अविकारी शब्द	100
19.	विराम चिह्न	106
20.	वाक्य विचार	112
21.	वाक्य शुद्धि	118
22.	मुहावरे और लोकोक्तियाँ	122
23.	अलंकार	129
24.	सूचना-लेखन	132
25.	अपठित बोध	134
26.	अपठित काव्यांश	138
27.	संवाद-लेखन	143
28.	अनुच्छेद-लेखन	147
29.	निबन्ध-लेखन	150
30.	पत्र-लेखन	160

पाठ 1

भाषा, बोली, लिपि, व्याकरण

मनुष्य परिवार में पल बढ़कर समाज का अंग बनता है। परिवार में रहते हुए सुख-दु:ख और अपने विचारों को प्रकट करता है।

मनुष्य इन विचारों को बोलकर, लिखकर और कई बार संकेतों की सहायता से भी प्रकट करता है। जैसे- आँखों की भौंहों को दिखाकर, मुँह बनाकर, सिर इधर-उधर हिलाकर, हाथों को घुमाकर तथा अपने हाव-भाव द्वारा आदि। इस प्रकार भावों और विचारों की अभिव्यक्ति भाषा कहलाती है। अत: हम कह सकते हैं कि **भावों और विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम भाषा कहलाता है।**

मुख्य रूप से भाषा के दो रूप हैं।

1. **मौखिक**
2. **लिखित**

1. **मौखिक भाषा :** जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से घर में तथा आस-पड़ोस में या अन्य किसी के सम्मुख अपने विचार बोलकर प्रकट करता है तो उसे मौखिक भाषा कहते हैं। दो मित्रों की परस्पर बातचीत मौखिक भाषा का उदाहरण है।

2. **लिखित भाषा :** जब व्यक्ति अपने या दूसरे के विचारों को लिखकर प्रकट करता है तो उसे लिखित भाषा कहते हैं। **जैसे** – एक व्यक्ति अपने मित्र को पत्र का प्रत्युत्तर लिखित भाषा में देता है। लिखित भाषा से ही साहित्य की अन्य विधाओं की रचना करना संभव होता है। समाचार पत्र तथा पुस्तकें आदि लिखित भाषा के उदाहरण हैं।

मौखिक और लिखित भाषा में अन्तर : भाषा का मौखिक रूप प्राचीन तथा सदैव परिवर्तनशील है जबकि लिखित रूप में स्थायित्व बना रहता है। स्थायी रूप होने के कारण ज्ञान परंपरा को संचित रखने में लिखित भाषा का महत्त्व अधिक है। इसी के कारण हमारा प्राचीन साहित्य भंडार सुरक्षित है। स्थायित्व की इसी विशेषता के कारण सम्पूर्ण संसार में लिखित भाषा को अधिक प्रामाणिक मानकर प्रमुखता दी जाती है।

उपभाषा : भाषा का आंचलिक रूप बोली कहलाता है। जब किसी बोली में साहित्य सृजन होने लगता है, तब उस बोली को उपभाषा कहते हैं। **जैसे** – मागधी, बघेली, ब्रजभाषा, अवधी आदि। विद्यापति ने अपनी रचना मैथिली, तुलसीदास और मलिक मुहम्मद जायसी ने अवधी तथा सूरदास ने ब्रज भाषा में रचना की। पहले ये सभी बोलियाँ थीं लेकिन अब ये भाषा (उपभाषा) के रूप में प्रयुक्त हो रही हैं।

समाज सुधारक महाकवि-गोस्वामी तुलसीदास

हिन्दी की बोलियों को पाँच भागों में बाँटा गया है।

1. पूर्वी हिन्दी।
2. बिहारी हिन्दी।
3. पश्चिमी हिन्दी।
4. राजस्थानी हिन्दी।
5. पहाड़ी हिन्दी।

हिन्दी				
पूर्वी हिन्दी	बिहारी हिन्दी	पश्चिमी हिन्दी	राजस्थानी हिन्दी	पहाड़ी हिन्दी
1. अवधी	1. मागधी	1. कन्नौजी	1. मालवी	1. गढ़वाली
2. छत्तीसगढ़ी	2. मैथिली	2. बुंदेली	2. मेवाती	2. कुमाऊँनी
3. बघेली	3. भोजपुरी	3. हरियाणवी	3. जयपुरी	
		4. ब्रजभाषा	4. मारवाड़ी	
		5. खड़ी बोली		

भाषा और बोली में अन्तर

भाषा

1. भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है।
2. भाषा में गद्य-पद्य युक्त साहित्यिक रचना होती है।
3. भाषा का अपना व्याकरण होता है।

बोली

1. बोली भाषा का क्षेत्रीय रूप होता है और यह रूप भाषा की अपेक्षा छोटे क्षेत्र तक सीमित होता है।
2. बोली का उपयोग सामान्य व्यवहार तथा विचारों के लेन-देन में होता है।
3. बोली का अपना कोई व्याकरण नहीं होता और न ही इसमें कोई साहित्यिक रचना होती है।

लिपि

लिपि का शाब्दिक अर्थ है चिह्न। लिपि लिखित भाषा का आधार होती है। जिन वर्ण-चिह्नों के माध्यम से मौखिक ध्वनियों को व्यक्त करते हैं उन्हें लिपि कहते हैं। संसार में जितनी भाषाएँ हैं सभी की अपनी लिपियाँ हैं। **जैसे** – भारत की अनेक भाषाओं की लिपि देवनागरी है।

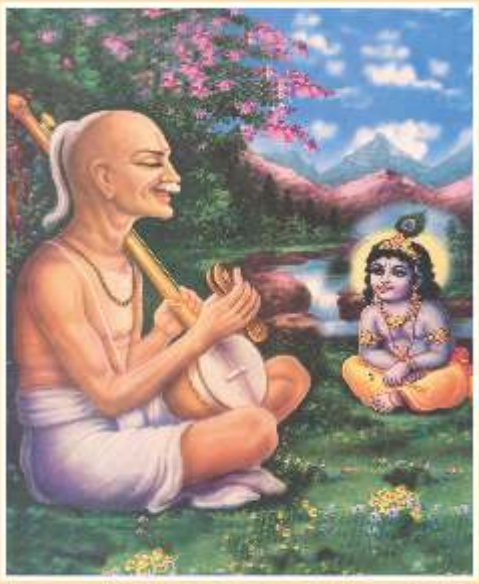

वात्सल्य के महाकवि-कृष्ण भक्त सूरदास

मीराबाई

प्रमुख भारतीय भाषाएँ एवं उनकी लिपियाँ		
क्रमांक	भाषा	लिपि
01.	हिंदी	देवनागरी
02.	सिंधी	देवनागरी/फ़ारसी, अरबी
03.	मराठी	देवनागरी
04.	कोंकणी	देवनागरी
05.	संस्कृत	देवनागरी
06.	नेपाली	देवनागरी
07.	संथाली/संताली	देवनागरी/ओल चिकि
08.	डोगरी	देवनागरी
09.	बोडो	देवनागरी
10.	मैथिली	देवनागरी/तिरहुता
11.	कश्मीरी	फ़ारसी, अरबी, देवनागरी, शारदा
12.	उर्दू	फ़ारसी, अरबी
13.	ओड़िआ	ओड़िआ
14.	बांग्ला	बांग्ला
15.	असमिया	असमिया
16.	तमिल	तमिल
17.	तेलुगु	तेलुगु
18.	मलयालम	मलयालम
19.	कन्नड़	कन्नड़
20.	मणिपुरी	मैतेई
21.	पंजाबी	गुरमुखी
22.	गुजराती	गुजराती / देवनागरी

भाषा और व्याकरण : भाषा एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा विचारों का आदान-प्रदान होता है। भाषा के द्वारा ही मनुष्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक के विचारों को जान पाया है। इस तरह भाषा व्यक्ति के भूत, वर्तमान और भविष्य को जोड़ती है। व्याकरण भाषा के शुद्ध और परिष्कृत रूप को बनाये रखने में सहयोग देती है।

भारत की मान्यता प्राप्त भाषाएँ-भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में बाईस भाषाओं को स्वीकृति प्रदान की गई है। ये निम्नांकित हैं :

01. हिन्दी	02. बांग्ला	03. बोडो	04. कश्मीरी
05. कोंकणी	06. कन्नड़	07. मणिपुरी	08. मराठी
09. मैथिली	10. मलयालम	11. सिंधी	12. पंजाबी
13. संथाली/संताली	14. संस्कृत	15. ओड़िआ	16. डोगरी
17. उर्दू	18. तमिल	19. तेलुगु	20. नेपाली
21. असमिया	22. गुजराती		

हिन्दी भाषा की स्थिति : सम्पूर्ण भारत में हिंदी सबसे अधिक प्रचलित एवं व्यापक जनभाषा के रूप में प्रचलित है। सम्पूर्ण विश्व में अंग्रेजी और चीनी भाषा के बाद, हिन्दी बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है। यह कई प्रदेशों की राजभाषा है। हिंदी प्रिय एवं मधुर भाषा है। जब अलग-अलग राज्यों के लोग आपस में मिलते हैं तो प्राय: हिंदी ही उनकी वार्तालाप का माध्यम होती है। यह (हिंदी) सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा है।

मानक भाषा : सभ्य, शिष्ट तथा सुशिक्षित लोगों द्वारा व्यवहार में लायी जाने वाली भाषा का रूप ही मानक भाषा है। आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों, विश्वविद्यालयों की हिन्दी कक्षाओं तथा औपचारिक चर्चाओं में भी मानक हिन्दी का उपयोग होता है। हिन्दी में अनेक प्रकार की विविधताएँ भी हैं। इन विविधताओं को हटाकर उनका कोई व्यावहारिक रूप स्वीकार करने के लिए ही मानक हिंदी की आवश्यकता समझी गई। शब्दों के भाव और वाक्य विन्यास में भी भिन्नता पाई जाती है, उस स्थिति में शिष्ट और सुशिक्षित जनों के द्वारा व्यवहार में प्रयोग लाया जाने वाला रूप ही स्वीकार करना होगा।

मातृभाषा : अपने माता-पिता तथा सगे सम्बन्धियों के परिवेश से सीखी जाने वाली भाषा को मातृभाषा कहा जाता है।

राजभाषा : किसी देश की मुख्य प्रचलित भाषा जिसका प्रयोग राजकीय प्रयोजनों व सार्वजनिक कार्यों में होता है राजभाषा कहलाती है। जैसे- भारत की राजभाषा हिंदी है।

राष्ट्रभाषा : किसी राष्ट्र की मुख्य प्रचलित भाषा जिसका प्रयोग उस राष्ट्र के जनसामान्य नागरिक भाव व निष्ठा से करते हैं, वही भाषा राष्ट्र भाषा कहलाती है। हिंदी स्वाधीन भारत की राष्ट्रभाषा है।

संपर्क भाषा : जो भाषा सांस्कृतिक और भाषिक स्तर पर राष्ट्र को जोड़ने का काम करती है वही संपर्क भाषा कहलाती है।

राष्ट्रीय भाषा : किसी भी देश में प्रयोग हो रहीं सभी भाषाएँ उस राष्ट्र की राष्ट्रीय भाषा कहलाती हैं। **जैसे –** बांग्ला, मलयालम, ओड़िआ आदि सभी प्रान्तीय भाषाएँ।

व्याकरण के विभाग

व्याकरण के निम्नलिखित तीन विभाग किए गए हैं :

1. **वर्ण विचार।** 2. **शब्द विचार।** 3. **वाक्य विचार।**

1. **वर्ण विचार :** व्याकरण के इस भाग में वर्णों के आकार, उच्चारण, वर्गीकरण, उनके संयोग व संधि के नियमों पर विचार किया जाता है।

2. **शब्द विचार :** व्याकरण के शब्द विचार में शब्दों के प्रकार, उनकी उत्पत्ति और रचना से संबंधित नियमों पर विचार किया जाता है।

3. **वाक्य विचार :** वाक्य विचार के अन्तर्गत वाक्य के भेद, अंग-उपांग, संश्लेषण, विश्लेषण और विराम चिह्न आदि के नियमों पर विचार किया जाता है।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा जारी हिंदी के मानक वर्ण और वर्तनी

- मानक हिन्दी वर्तनी से सम्बन्धित बातें : ऋ, ऌ, ॡ का प्रयोग हिन्दी में न होने के कारण इन्हें हिन्दी की मानक वर्णमाला में स्थान नहीं दिया गया है।
- संयुक्त वर्ण पाई हटाकर या हलंत लगाकर बनाए जाते हैं। **जैसे** – बच्चा, पक्का, चिह्न।
- विभक्ति चिह्न संज्ञा शब्दों से पृथक तथा सर्वनाम शब्दों से मिलाकर लिखे जायेंगे।

  जैसे – **संज्ञा**- राम को, अनुराधा को।

  सर्वनाम - उसको, मुझको।
- संयुक्त क्रियाएँ पृथक-पृथक लिखी जायेंगी, जैसे- पढ़ चुका है।
- अव्यय पृथक लिखे जायेंगे। **जैसे** – उनके साथ, यहाँ तक, श्री, जी आदि भी अलग लिखे जायेंगे। **जैसे** – श्री शर्मा, शर्मा जी।
- क्रियाविशेषण अव्यय आदि में 'य' तथा व की जगह स्वरात्मक प्रयोग किया जाए, **जैसे** – नयी-नई, हुवा-हुआ। किए, आए, नई, हुआ आदि मानक रूप हैं। जहाँ 'य' शब्द का मूल भाव हो वहाँ वह य ही रहेगा। **जैसे** – स्थायी।
- अव्ययीभाव, दायित्व आदि में 'य' के स्थान पर ई नहीं आएगा।
- संयुक्त व्यञ्जन के रूप में पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया जाएगा। अनुस्वार (ं) तथा अनुनासिक (ँ) दोनों चिह्न प्रयोग में आएँगे। शिरोरेखा के ऊपर मात्रा व चंद्र बिंदु होने पर दोनों के लिए स्थान अभाव हो जाता है अतएव चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु (अनुस्वार) लगाना चाहिए। **जैसे** – मैँ-मैं। अन्यथा चंद्रबिंदु का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- क़, ख़, ग़, ज़, फ़ में से क़, ख़, ग़ ध्वनियाँ हिन्दी उच्चारण में परिवर्तित हो गई हैं केवल ज़, फ़ अभी भी प्रयोग में हैं। अरबी, फारसी या अंग्रेजी के शब्दों के उच्चारण में इनका प्रयोग मानक है।
- कुछ शब्द दोनों रूपों में मानक हैं। **जैसे** – गर्मी-गरमी, गर्दन-गरदन आदि।
- श्रीमान, विद्वान आदि शब्दों के अंत का हलंत हिन्दी में लुप्त हो चुका है। तत्सम शब्दों में हलंत मान्य है।
- तत्सम शब्दों में तीन व्यञ्जनों के संयोग की स्थिति में **द्वित्व मूलक व्यञ्जन** लुप्त हो गया है, उसे न लिखने की छूट है। **जैसे** – अद्‌र्ध को अर्ध, तत्त्व को तत्व के रुप में लिखने का प्रचलन प्रारम्भ हो गया है।
- तत्सम शब्दों के तद्‌भव हो जाने पर विसर्ग का लोप हो जाता है। **जैसे** – दु:ख-दुख।
- पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए। **जैसे** – दौड़कर, पढ़कर आदि।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क. भाषा किसे कहते हैं?

ख. बोली से आप क्या समझते हैं?

ग. भाषा और बोली का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

घ. लिपि भाषा के किस रूप में प्रयोग की जाती है?

2. निम्नलिखित की परिभाषा दीजिए।

क. मातृभाषा .....

ख. राजभाषा .....

ग. राष्ट्रभाषा .....

घ. संपर्क भाषा .....

3. निम्नलिखित प्रान्तों की राजभाषाओं के नाम प्रान्तों के सामने लिखिए

क. पंजाब ..... ख. उत्तरप्रदेश .....

ग. हरियाणा ..... घ. राजस्थान .....

ङ. महाराष्ट्र .....

4. किन्हीं पाँच भाषाओं के नाम लिखिए जो भारत की प्रचलित भाषाएँ हों।

5. निम्नलिखित भाषाओं की लिपियों के नाम उनके सामने लिखिए

क. अंग्रेजी ..... ख. पंजाबी .....

ग. बांग्ला ..... घ. उर्दू .....

ङ. हिन्दी .....

6. अपने प्रांत में बोली जाने वाली हिन्दी की बोलियों के कम से कम 20 शब्द तथा उनके सामान्य अर्थ लिखें जो जन सामान्य द्वारा प्रयोग किये जाते हैं।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

पाठ 2

वर्ण-वर्णमाला

वर्ण-हम लोग प्रतिदिन कुछ-न-कुछ बोलते हैं, बोलने पर मुँह से आवाज या ध्वनि निकलती है। यह ध्वनि इतनी छोटी होती है कि इसका उच्चारण संभव नहीं होता इसे मूल ध्वनि कहते हैं। इसके खण्ड नहीं किये जा सकते। इसे ही वर्ण कहा जाता है। जैसे- क्, ख्, ग् आदि।

वर्णमाला : वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।

हिन्दी वर्णमाला

1. स्वर 2. व्यञ्जन

स्वर

स्वर : जो वर्ण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता के बोले जाते हैं, वे स्वर कहलाते हैं। जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ और औ।

अयोगवाह : अं (अनुस्वार) तथा अः (विसर्ग)। ये दोनों ध्वनियाँ स्वर और व्यञ्जनों के मध्य स्थित हैं। इनका उच्चारण स्वर तथा व्यञ्जन की भाँति होता है।

स्वर के भेद : स्वर के निम्नलिखित तीन भेद हैं-

(क) ह्रस्व स्वर (ख) दीर्घ स्वर (ग) प्लुत् स्वर

क) **ह्रस्व स्वर :** जिन स्वरों के उच्चारण में सबसे कम समय लगता है, वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। ये चार हैं- अ, इ, उ, और ऋ।

ख) **दीर्घ स्वर :** जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय लगता है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं। ये सात हैं। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ।

ग) **प्लुत् स्वर :** जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वरों से तिगुना समय लगता है, वे प्लुत् स्वर कहलाते हैं। ये प्रायः दूर से पुकारने के लिए प्रयुक्त होते हैं, इसीलिए उच्चारण की स्पष्टता के लिए वर्ण के आगे ३ लगा दिया जाता है। इसका तात्पर्य है तिगुना समय। ओ३म्। हे रा३म! आदि।

व्यञ्जन

व्यञ्जन : जिन वर्णों के उच्चारण में हमारी श्वास-वायु मुख के किसी अवयव से टकराकर बाहर आती है, उन्हें व्यञ्जन कहते हैं। ये व्यञ्जन स्वर की सहायता से ही बोले जाते हैं। व्यञ्जन स्वर रहित होते हैं। **जैसे**- क्, ख्, ग्, घ् आदि।

हल् चिह्न (्) : यह स्वर रहित होने का चिह्न है। जहाँ कहीं स्वर-रहित व्यञ्जन का प्रयोग करना हो, वहाँ हल चिह्न का प्रयोग किया जाना चाहिए।

हिन्दी के व्यञ्जन वर्ण इस प्रकार हैं- क, च, ट, त तथा प वर्ग।

कवर्ग	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	**चवर्ग**	च्, छ्, ज्, झ्,ञ्
टवर्ग	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्	**तवर्ग**	त्, थ्, द्, ध्, न्

पवर्ग प्, फ्, ब्, भ्, म् स्पर्श व्यञ्जन–25

2. अंत:स्थ व्यञ्जन य्, र्, ल्, व् – 4 3. ऊष्म व्यञ्जन श्, ष्, स्, ह् – 4

संयुक्त व्यञ्जन क्ष त्र, ज्ञ, श्र

ड़्, ढ़् क्रमश: ड और ढ से विकसित वर्ण हैं।

आगत वर्ण – स्वर : 'ऑ'। इसका उच्चारण आ और ओ के मध्य होता है। जैसे– डॉ. तथा बॉल आदि।

व्यञ्जन : ज़् और फ़् (अरबी, फारसी और अंग्रेजी शब्दों के सही उच्चारण के लिए)।

व्यञ्जन के भेद : व्यञ्जन के तीन भेद हैं –

क. स्पर्श व्यञ्जन : व्यञ्जनों के इस वर्ग को स्पर्श व्यञ्जन इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इन व्यञ्जनों के उच्चारण में जीभ मुख के किसी न किसी स्थान-विशेष का स्पर्श करती है। स्पर्श किये जाने वाले स्थान भेद के कारण ही स्पर्श व्यञ्जनों के निम्नलिखित वर्ग हो जाते हैं। इनकी संख्या 25 है।

वर्ग	स्पर्श व्यञ्जन	नाम	उच्चारण स्थान
क वर्ग	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	कंठ्य	कंठ
च वर्ग	च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	तालव्य	तालु
ट वर्ग	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्	मूर्धन्य	मूर्धा
त वर्ग	त्, थ्, द्, ध्, न्	दंत्य	दाँत
प वर्ग	प्, फ्, ब्, भ्, म्	ओष्ठ्य	ओष्ठ

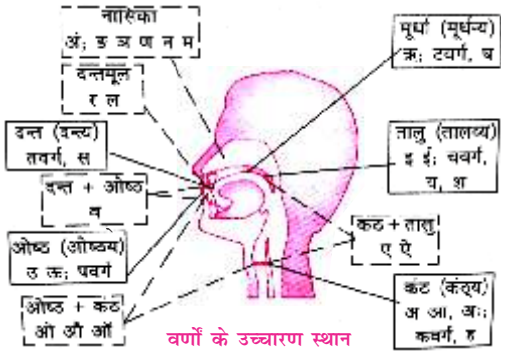

वर्णों के उच्चारण स्थान

ख. अंत:स्थ व्यञ्जन : जिन व्यञ्जनों के उच्चारण में श्वास का अवरोध बहुत कम हो, वे अंत:स्थ व्यञ्जन कहलाते हैं। ये संख्या में चार हैं – य् र्, ल् व्

ग. ऊष्म व्यञ्जन : जिन व्यञ्जनों के उच्चारण में हवा मुख के विशेष भागों से घर्षण करने के कारण गरम हो कर निकलती है, ऊष्म व्यञ्जन कहलाते हैं। ये संख्या में चार हैं – श् ष् स् ह्

संयुक्त व्यञ्जन : दो या दो से अधिक व्यञ्जनों के संयोग से बनने वाले व्यञ्जन संयुक्त व्यञ्जन कहलाते हैं। **जैसे –**

क्+ष्+अ = क्ष – क्षत्रिय, क्षमा त्+र्+अ = त्र – त्राण, त्रास

ज्+ञ्+अ = ज्ञ – ज्ञान, ज्ञात, यज्ञ श्+र्+अ = श्र – श्रीमान्, श्रीश, श्रम

द्वित्व व्यञ्जन : जब किसी शब्द में दो या दो से अधिक समान व्यञ्जनों के बीच कोई स्वर ध्वनि न हो, तो ये आपस में जोड़कर उच्चारण किए जाते हैं और लिखाई में इन्हें मिलाकर लिखा जाता है, तब ये द्वित्व व्यञ्जन कहलाते हैं। **जैसे –**

क्क = क्+क्+अ (पक्का, मक्का, फक्कड़) च्च = च्+च्+अ (सच्चा, कच्चा, सुच्चा)

त्त = त्+त्+अ (सत्ता, पत्ता, कुत्ता) ल्ल = ल्+ल्+अ (भल्ला, मल्ला, पिल्ला)

व्यञ्जन गुच्छ : जब दो या दो से अधिक व्यञ्जन साँस के एक ही प्रयास में उच्चरित किए जाते हैं उन्हें व्यञ्जन गुच्छ कहा जाता है। जैसे – ग्वाला शब्द में ग्व को एक झटके में बोला जाता है। अत: ग्व एक व्यञ्जन गुच्छ है। व्यञ्जन गुच्छ के कुछ अन्य उदाहरण देखिए – क्+त – रक्त, स्+त – मस्त, ग्+न – अग्नि, स्+थ – स्थान आदि।